रचनात्मक साहित्यमे भाषा साहित्यसँ इतर विधाक कोनो रचनाकारसँ हमरा बेसी आशा भ' जाइछ। श्री कामेश्वर चौधरी एहने एक कवि छथि। अपन जीविका विद्या इंजीनियरीमे यथेष्ट दक्ष-कुशल ओ बहुविध कार्यक्षेत्रक विपुल अनुभव यात्रासँ परिपूर्ण श्री चौधरी मातृभाषा मैथिली प्रेममे आब अपन सेवानिवृत्त जीवन, साहित्य लिखबाक नेयारसँ प्रथम कविता पुस्तक 'सनेस' लऽ समाजक सम्मुख आबि रहल छथि। ई बहुत हर्षक बात। स्वागत करैत हम अपन बधाइ दैत छिअनि आ विशाल पाठक समाजक स्नेह प्राप्त करथि, तकर हृदयसँ शुभकामना!

– **गंगेश गुंजन**, *प्रख्यात वरिष्ठ मैथिली लेखक*

'सनेस' शीर्षक नामसँ लिखने छथि काव्य-संग्रह मित्रवर श्री कामेश्वर चौधरी। ई एक उत्तम काव्य-संग्रह अछि, बिल्कुल खाँटी मैथिली, अपन आ निजी भाव-भंगिमासँ ओत-प्रोत। हम चौधरी जीक नव अवतारक स्वागत करैत छी, आ आशा करैत छी जे ओ आगुओ रचनाशील रहथि।

– **मंत्रेश्वर झा**, *सेवानिवृत्त IAS अधिकारी एवं प्रख्यात मैथिली लेखक*

भक्तिगीत, लोकगीत एवं काव्यधाराक पेटारमे सैंतल मैथिलीक विविध आयामी रचना जे अपन इंद्रधनुषी रंगसँ सराबोर करक लेल तैयार अछि, से छी 'सनेस'। लगैछ जे कवि अपन दीर्घकालक अनुभव, विचार आ अंतरतमक भावना व्यक्त कयने छथि।

– **कुँवर नारायण**, *वरिष्ठ साहित्यकार एवं मानद निदेशक, अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद्, दिल्ली, एवं पूर्व प्राचार्य, गयाना विश्वविद्यालय, दक्षिण अमेरिका*

रचनाकार

एहि कविता-संग्रहक रचयिता **कामेश्वर चौधरी** बिहारक मधुबनी जिलांतर्गत मेघौल गामक निवासी छथि। भारतीय रेलवेमे पूर्व भंडार नियंत्रक एवं भारत सरकारक वाणिज्य एवं उद्योग विभाग (DPIIT)क लेल 'मेक इन इंडिया'मे लोक-क्रय नीतिक सलाहकार रहलाह। मैथिली भाषाक प्रति हिनक स्नेह एवं भाषा-प्रेमक अवदान रहल निरंतर रचना, जे विभिन्न पत्र-पत्रिकामे समय-समय पर प्रकाशित होइत रहल। पुस्तक रूपमे 'सनेस' हिनक मैथिलीक प्रथम कविता-संग्रह अछि।

इंडिका इन्फोमीडिया
नई दिल्ली

ISBN 9788196269067
9 788196 269067
मूल्य : ₹ 300/-

सनेस

कामेश्वर चौधरी

सनेस

(मैथिली कविता-संग्रह)

कामेश्वर चौधरी

सनेस

(मैथिली कविता-संग्रह)

कामेश्वर चौधरी

इंडिका इन्फोमीडिया
जनकपुरी, नई दिल्ली–110 058

ISBN : 978-81-962690-6-7

सनेस

लेखक : कामेश्वर चौधरी

सर्वाधिकार © : कामेश्वर चौधरी

संपर्क :
28 सी, एवरशाइन अपार्टमेंट, डी ब्लॉक,
विकासपुरी, नई दिल्ली–110018
मोबा. : 97172 45666
ई-मेल : cmmsnr@gmail.com

प्रकाशक
इंडिका इन्फोमीडिया
डब्ल्यू.जेड. 158ए, लाजवंती गार्डेन, नई दिल्ली–110046
मोबा. : 9350951555; ई-मेल : indicainfo@gmail.com

प्रथम संस्करण : 2024
मूल्य : ₹ **300/-**

आवरण
इंडिका इन्फोमीडिया

मुद्रक
आस्था एंटरप्राइजेज, नारायणा, नई दिल्ली

Sanes : A Book of Maithili Poems *by* Kameshwar Choudhary
Price: ₹ 300/-

समर्पित

माए सावित्री देवीकेँ

अनुक्रम

प्रस्तावना	*नौ*
प्राक्कथन	*ग्यारह*
भक्तिगीत	1
1. हे गणपति!	3
2. माँ शारदे!	5
3. हे दिनकर दीनानाथ!	6
4. हे कृष्ण!	8
5. हे गङ्गे!	10
6. हे काशी!	11
7. राम अवधमे	12
8. हे जानकी!	13
9. हे साँई!	15
10. हर हर महादेव	16
लोकगीत	17
1. आह्वान	19
2. हाथी अगत, आ घोड़ा अगत	20
3. माए-बेटाक झगड़ा (नोक-झोंक)	21
4. गीत	23
5. मुञ्चेश्वर-गाथा	24
6. अयोध्या में राम	25

7. प्रश्न रामसँ 26
8. सोहर 27
9. मधु-जननी 28
10. आएल बसन्त 29
11. अहाँ कतऽ नुकाएल छी राधा 31
12. गीत सँ भरि दी गगनकेँ 32

काव्यधारा 33
1. सनेस 35
2. पप्पा, पूरी गोल किए'? 37
3. इराके (बाल-कविता) 39
4. आगाँ नाथ, ने पाछाँ पगहा 40
5. हम घूमि रहल छी बिकानेर 41
6. हे समय 43
7. सिनेह 44
8. सम्वाद 45
9. विचार 46
10. माए, जाइ छियौ' 48
11. बड़की-बाड़ी 49
12. टेंडरक महिमा 51
13. टेलिफोन डायरी 52
14. भामती 53
15. कारी रंगक महिमा 55
16. हेरा गेल गाम हमर 56
17. कतेक दूर 57
18. हमहीं सभटा 58
19. चुनावक शंखनाद 59
20. आजुक दिन 61
21. प्रथम यात्रा 62
22. पदार्पण—बम्बई शहर 64

23. व्यापारवाद 66
24. नवतुरिया मैथिल 68
25. हम आब लिखब की? 69
26. मिझा गेल डिबिया 71
27. अनसोहाँत बरखा 72
28. जलवायु परिवर्तन 75
29. विदेशरक मेला 77
30. आत्माक खोज 79

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः

– ऋग्वेद

(हमरा लेल सभ दिशासँ कल्याणकारी विचार आबय।)

प्रस्तावना

काव्यक वृहत् अकासक फलकपर मैथिली काव्य-साहित्यमे छिटकल तरेगन जकाँ झिलमिलाइत आ अङ्राइत छोट छीन दीप जकाँ जरैत आ इजोत करैत, श्री कामेश्वर चौधरी जी लिखित रचना सब नव पद्य-संग्रह 'सनेस'क रूपमे प्रकाशित भऽ रहल अछि। अइमे भक्तिगीत, लोकगीत आ काव्यधारा, ऐ तीनूक सङोर अछि। सनेस ताहि रचना सभक समग्र रूप थीक, पुस्तकाकार। ई रचना सभ लोककेँ सभ रूपमे आन्दोलित करक क्षमता रखैछ, चाहे बालवृन्द, किशोरक लेल जिज्ञासा हो, अथवा प्रेमक अभिव्यक्ति हो, या आराध्य देवकेँ उलहन हो। एहिमे मानव-निर्मित तंत्रक प्रभाव, प्रकृति संग व्यवहार आ लोक-व्यवहार सभटा अछि। एकहि ठाम सब भावक अभिव्यक्ति आ मूर्त-रूप।

सनेसमे आधासँ बेसी रचना गेय रूपमे अछि जे सामान्यतः बिना वाद्य-यंत्रक सहयोगसँ गाओल जयबाक सामर्थ्य रखैछ। गेय काव्य गद्य-कवितासँ बेसी चिरंजीवी होइछ, कारण ओ लोक-ध्वनि द्वारा सतत तरंगित रहैत अछि। तेँ ई रचनासभ जुग-जुग धरि जन-जनमे व्याप्त रहि सकत, से विश्वास अछि। अतुकान्त कविता जे एहि संकलनक भाग अछि, से व्यक्तिक विशिष्ट भावना, प्रेम, भक्ति, अध्यात्मकेँ जोड़ैत अछि आ लौकिक क्रियाकलापमे यात्रावृत्ति, संस्मरण आ मानवक समक्ष उठैत संघर्षक वेदनाकेँ अभिव्यक्ति करैत अछि। एहि पद्य-संग्रह मे बाल-पद्य सेहो अछि आ पर्यावरणक चिन्ता सेहो। 'विदेशरक मेला' मोन पड़ै छन्हि आ 'अनसोहाँत बरखा' सेहो; आ से ओ लिखै छथि—"माघ बरिसबे करए/ भाए बँटबे करए/ बाँस कटबे करए"—कहैत छलाह हमर दादा। नवतुरिया मैथिलक उकटा-पैंची हुनका नै सोहाइत छन्हि। वाद सभमे बँटैत देश, असमर्थ होइत लोक आ व्यापारवादक प्रकोप कविकेँ एकटा ट्रेण्ड नै, वरन्

व्यापारवादक एकटा प्लान सन बूझि पड़ै छन्हि; आ ओ क्षुब्ध छथि।

आजुक दिन बितैत छन्हि, अगिला यात्रा लेल पेटी सैंतैत। कतेक दूर आबि गेल छथि जतऽ स्वर मुना गेल छन्हि।

डिबियाकेँ ओ दइ छथि दीपक शिखाक बिम्ब।

मुदा धरतीकेँ सोधि रहल मानव, जे सौंसे विज्ञापन छापि रहल अछि, से देखि ओ क्षुब्ध छथि, से आब ओ लिखता की?

आ 'आत्माक खोज'मे ओ दार्शनिक सन तटस्थ बनि जाइत छथि—'तटस्थ भऽ गेल छी/ समुद्रक पानि जकाँ/ पहाड़क आकृति जकाँ/ नदीक प्रकृति जकाँ/ सूर्यक अभिव्यक्ति जकाँ/ चन्द्रक मौलिकता जकाँ/ तरेगनक दृष्टि जकाँ/ गाछ-वृक्षक स्वभाव जकाँ।'

श्री कामेश्वर चौधरी जीक सबल पक्ष छन्हि इएह दार्शनिकता। जे 'अगिला यात्रा लेल पेटी सैंतैत' दिन बितबाक आ 'तरेगनक दृष्टि जकाँ' तटस्थ बनबाक कथा बनि जाइत अछि। श्वेताश्वतार उपनिषद्मे ईश्वरक तुलना जादूगरसँ कएल गेल अछि, आ शंकराचार्य कहै छथि जे जकरा जादूक भेद नै बुझल छै, से जादूगरक करतबसँ आश्चर्यित होइत छथि। मुदा श्री कामेश्वर चौधरी जीक आत्माक खोज स्पष्ट करैत अछि जे ओ जादूक करतब सँ आश्चर्यित नै होइ छथि। आब आशा करब जे ओ तटस्थ हेबाक बिम्बकेँ अगिला संग्रहमे आर आगाँ बढ़ाबथि, कारण हुनकर सबल पक्षकेँ चीन्हि लेल गेल छन्हि।

— गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह ई-पत्रिका

मो. - 95609 60721

प्राक्कथन

उमेरक अनेको काल-खण्ड बीति गेल। सरकारी कार्यकलाप एवं लोकसेवाक प्रकल्पमे निरंतर व्यस्तता बनल रहल, जाहि कारणे साहित्यिक अभिव्यक्ति संभव नहि भऽ सकल। किशोरावस्थाक मैथिली-प्रेम समयक विशाल अंतरालमे एखन धरि उधियाइत रहल अछि। परंतु गीत आ स्वतःस्फूर्त रचना मोनक घरमे रहबा लेल तैयार नहि। तै' ई पुस्तकाकार रूप।

छोटका काका (स्व. श्री केदार नाथ चौधरी) अपन बयसक अंतिम पड़ावमे मैथिली भाषामे 'चमेली रानी', 'अबारा नहितन' जकाँ उत्कृष्ट छओटा पोथी दिल्लीक प्रकाशन-गृह 'इंडिका इन्फोमीडिया'सँ प्रकाशित करौलनि आ एहि क्रममे संपादक एवं प्रकाशक अरविन्द गुप्ता जी सँ हमर परिचय सेहो भेल। हुनकर पत्रिका 'साक्षी भारत' एवं 'दिल्ली न्यूजट्रैक'मे कविता आ आलेख प्रकाशित होइत रहल; तेँ हुनक आग्रह जे साहित्यमे पुस्तकाकार रूपमे हमहूँ किछु लिखी आ प्रकाशित कराबी। एमहर किछु दिन सँ हमर मित्र श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र जे निरंतर उपन्यास लिखबामे लागल छथि, रहि-रहि कऽ उसकबइत रहलाह। ई-पत्रिका 'विदेह'क युवा संपादक गजेन्द्र ठाकुर जी एवं 'देसिल बयना'क संपादक श्री चंद्र मोहन कर्ण जी अपन पत्रिकामे हमर किछु छोट-मोट रचनाकेँ प्रकाशित कय उत्साहित कयलाह।

लिखबाक अंतःप्रेरणा तऽ पहिनेसँ छल, ताहि पर संपादक-मित्रक प्रोत्साहन सेहो। एहि क्रममे ई काव्य-संग्रह—सनेस—समाजक लेल। भक्ति-गीत, लोक-गीत आ काव्यधारा तीन खंडमे विभाजित अछि 'सनेस'। बालक, युवा आ प्रौढ़ स्त्री व पुरुष, सभक लेल।

रचनाक वैविध्यता काल-खंडक प्रतिमान थीक; जेना 'माए-बेटाक झगड़ा'

हमर इसकुल दिनक लोकगीत अछि, तऽ 'हे कृष्ण' आ 'प्रश्न रामसँ' हमर अवकासप्राप्त जीवनक रचना। 'प्रथम यात्रा' आ 'पदार्पण–बम्बई शहर' संस्मरणात्मक रचना। 'पप्पा, पूरी गोल किए?' बाल प्रश्न एक बाल-पत्रिका आ स्मारिकाक लेल छल, जे शहरक बीच बढ़ैत बच्चा आई बुझे चाहैछ। ताहि विविध रचनाक ई 'सनेस'।

प्रस्तुत अछि विभिन्न काल-खंडक रचित पुस्तकाकार संकलन; जे सभकेँ उत्साहित, उद्वेलित आ आनंदित करैत अछि। पाठकीय प्रतिक्रियाक अपेक्षा रहत।

स्नेहाकांक्षी...

– कामेश्वर चौधरी

मो. - 97172 45666

भक्तिगीत

हे गणपति!

हे गणपति गणनाथ विनायक
सकल विघ्नकेँ दूर करू
मोदमय मन मुदित मंगल
लालसा सब पूर करू।

बुद्धि अपन विवेक लौकित
रातिके अनहार लोपित
मूसके रथ पर चढ़ल
मोदकक प्रिय, उदर झोकथि
शिवक प्रिय, गौड़ीक मनसा
पाथर पहारक चूर करू।
    हे गणपति गणनाथ विनायक...

लेखनी अहींके समर्पित
ज्ञान आ विज्ञान अर्पित
अछि अहींके प्रेरणासँ
भरल मोन सिनेह नर्तित
कामना ककरा कहब हम
अहीं गुरु, तम दूर करू।
    हे गणपति गणनाथ विनायक...

मन विखंडित, तन विखंडित
जीवनक उमंग विखंडित
बाट जे अनहार रातिक
बारि दीप करी आलोकित
कौशलक सब ज्ञान दऽ
सब मंगले मंगल करू।

हे गणपति गणनाथ विनायक...

माँ शारदे!

हे माए अहींकेर चरण कमलमे
कऽ रहल छी वन्दना।
अछि छूटि गेल सभ आस जगतक
हम करै' छी क्रन्दना।

हे शारदे, स्वर-ध्वनि प्रगल्भित
अछि अहींके माए अर्पित
मधुर वीणाकेर कम्पन
हम करै छी अर्चना।

हंसवाहिनि कमल राजिनि
कला-कौशलसँ सँवारलि
हमर अक्षरके स्वरक
अभिव्यक्ति दी ई प्रार्थना।

वारि शीतल, हंस तीतल
कमलदलक उमङ्ग जीतल
श्वेत वस्त्रा, शंख हस्ता
हम करी अभिनन्दना।

हे दिनकर दीनानाथ!

हे दिनकर दीनानाथ! अहाँ कहिया उगबै
हम ताकी बाट अहाँक, अहाँ कहिया उगबै?

अछि निशाभाग ई राति
देश-दुनिया अन्हार
ने अपने घर सुझैछ
राति भ' गेल पहाड़
हम दैत हथोड़िया राति पहर
कतबा दिन तकबै। हे दिनकर दीनानाथ! ...

ने भगजोगनीकेर कोनो जोति
खिड़की लग उड़य लागल
निराशे पड़ल निमग्न शरीर
नहिं किछुओ फुरायल
अहाँके देलक तोपि मेघ
अहाँ कहिया जगबै'। हे दिनकर दीनानाथ! ...

जरायब दीप माटिक हम
आ तागक, तेलमे बाती
लिखब आखर देबाले पर

आ गायब गीतकेर पाती
घरे-घर दीपमाला जोड़ि
अहाँक स्वागतमे हम लगबै’। हे दिनकर दीनानाथ! ...

तरेगन सूति रहलै’ भेर
पराती अछि हमर थाकल
इजोरियाके समेटने अछि
अहाँ मदमे कोना मातल
हमर विश्वासके पति राखि
अहाँके रूप की देखबै। हे दिनकर दीनानाथ! ...

हे कृष्ण!

हे कृष्ण अहाँ वृन्दावनमे
कहिया तक रहब करैत रमन
युग बीति गेल हे अवध-नृपति
एकबेर करू मिथिलाक भ्रमण।

अज्ञान घेरि लेलक अछि मन
अवरुद्ध अग्निपर भस्म जखन
के फूकि सकत आ जगा देत
एक बेरि एतऽ बनि जाउ स्वजन। हे कृष्ण...

वृन्दावनमे छुटली राधा
मथुरा चलि गेल रही आधा
मिथिलाकेर सीता सतत संग
रहलीह जखन भटकी वन-वन। हे कृष्ण...

पुतना बनि माए पिआओल गरल,
कंशक सन मामक दंश सहल
मिथिलाक प्रतिष्ठा 'विष्णु रूप'
कहिया पड़तैक अहाँऽक चरण। हे कृष्ण...

सोलह हजार गोपीक बीच
बटलहुँ प्रेमक अहाँ मंत्र-बीज

सारिक सिनेह, सत्कार सासुकेर
भेटि सकल जनकेक शरण। हे कृष्ण...

मिथिलाक न्याय आ बृहत् ज्ञान
विश्वास, प्रेम सभ भेल म्लान
विस्मृत संस्कृति छटपटा रहलि
करू त्राण सभक, हम करी नमन। हे कृष्ण...

छी बिसरि गेल अहाँ अपन शब्द
आ नुका गेलहुँ भूगोल मध्य
द्वारिकाधीश तजि सिंहासन
वसुधैव कुटुम्बक करू श्रवण। हे कृष्ण...

हे गङ्गे!

हे गङ्गे, अहाँके प्रणाम करै' छी
अहाँ पसरैत रही, हम विराम करै छी।

सुत सगरक जियाओल अहिंक कोरमे
जतन भागीरथक भेल अहिंक छोड़मे
छोड़ि शिवके जटा, अहाँ गोमुख गेलहुँ।
अलकधारामे जाए, मिलान करै छी। हे गङ्गे...

धोल द्वारि महादेवक हरिद्वारमे
मेल केलहुँ बहिनसँ प्रयागद्वारमे
घूरि उत्तर 'असी'क घाट, शिवके नमी
अहाँ वाराणसीकेँ जियान केने छी। हे गङ्गे...

अहाँ सीचल सिनेहें, सिमरियाक रेत,
भेल हरियर कचोड़ हमर मिथिलाक खेत,
धान निकलल जे जानकीक खोंछिसँ बहार
अहाँ मगह-मुंगेरके ललाम केने छी। हे गङ्गे...

गेलहुँ बाबाक धाम, तकैत सुलतानगंज
जलभरियाक जल दैत, छोड़लहुँ तरंग
जाए बंगक प्रदेश, कलकत्ता बसाओल
डूबि सागरमे गंगा-मिलान करै छी।
हे गङ्गे..., अहाँके प्रणाम करै छी।

हे काशी!

हे काशी! हे काशी!
छथि बसल अहाँकेर कण-कणमे, घट-घट वासी
हे काशी! हे काशी!
अहाँ बसा देलहुँ एक नगर जतऽ
अयलाह एतऽ कैलास निवासी। हे काशी! हे काशी!

ई ज्ञान नगर गंगा तट पर
वरुणा आ असी के बीच शहर
माँ शारदेक धरती छी ई
देवक वाणी अछि बनल अमर
जन-जनमे लिप्सा ताकि रहल
विज्ञान-ज्ञान के अभिलाषी। हे काशी! हे काशी! ...

ई महामना के कर्मभूमि
सम्पूर्णानन्दक प्रेम भरल
काशीक हिन्दू विश्वविद्यालय
अछि विश्व पटल पर जा उतरल
धरती, जल, गगन, पवन, पावक
संगीत-गीत सभ अछि दासी। हे काशी! हे काशी! ...

गंगा, गैया, गीता सभठाँ
गायत्रीकेँ गाथा गबैत
ई हरिश्चंद्रके तपोभूमि
तुलसी, कबीरके धुनि सुनैत
देलहुँ जे ज्ञान अहीं हमरा,
हम छी विवेकके अभिलाषी। हे काशी! हे काशी! ...

राम अवधमे

एसगर राम अवधमे, सीता कहाँ छूटलि हे
राम, आँचल जोड़ल चदरिया
गाँठ कोना टूटल हे।

अविचल केहन रहल मन
वन-वन भटकल हे
राम, रहल सिनेहक संग
सियामे जान अटकल हे।

पंचवटी में सीता
बेकल मोन एसगरि हे
राम, आजुक व्याकुल ध्यान
करम सिया फूटल हे।

सौंसे वन बसल वियोग,
परान विकल भेल हे
राम, अहाँक कुलक मरजाद
कोना अछि लूटल हे।

हे जानकी!

हे जानकी राम-प्रिया,
शुभ मंगले, हे जानकी
हे मैथिली, जनककसुता
शक्तिक स्वरूपा जानकी।

जनकक परीक्षाफल भेटल
रौदी कृषक के छल मेटल
हर जोतलनि सीता प्रकट
घैला सँ निकललि जानकी।
हे जानकी राम-प्रिया...

सभ बाग अपन अछि फुला गेल
आँगन जनकक अछि खिला गेल
तीनू बहिन संग मिलि अहाँ
भरलहुँ जनकपुर, जानकी।
हे जानकी राम-प्रिया...

छल शिव-धनुष जनकक महल
मध्ये पड़ल पूजित रहल
जनकक प्रतिज्ञा तोड़ि धनुषक
बनतैक 'वर' के जानकी?
हे जानकी राम-प्रिया...

महफा अहाँक जखन उठल
मिथिलाक चिन्ता छल भरल
खोंछिक पड़ल दुबि-धान सँ
धन-धान्य केलहुँ जानकी।
हे जानकी राम-प्रिया...

अहाँ त्यागके उपमान छी
मिथिलाक गौरव, शान छी
छोड़ल अवध रामक संग
वन-वन भटकि, हे जानकी।
हे जानकी राम-प्रिया...

अहाँ स्वाभिमानक मूर्ति छी
धरतीक वैभव कीर्ति छी
अग्निक परीक्षा, लोक दंशक
सहि सतत हे जानकी।
हे जानकी राम-प्रिया...

हे साँई!

हे साँई! अहींकेर दर्शन ले’
शिरडीक धाममे आयल छी
घर-द्वारि छोड़ि छी आबि गेल
बस अहिंक शरणमे आयल छी।

दुःख-दर्द भरल हम्मर जीवन
ककरा कहबै भटकी रन-बन
सभटा दरबज्जा बन्द देखि
हम अहिंक शरणमे आयल छी।

जे भेटल सभटा लुटा गेल
नहि बचल संगमे बाट लेल
जे कही अहाँ, से आब करब
हम अहिंक शरणमे आयल छी।

जहिया कहियो आह्वान कएल
भऽ गेल तखन छल त्राण हमर
कतबो संकटमे रही हऽम,
कएलहुँ बड़का कल्याण हमर
हे साँई! अपन छतरीक छाँह
दी, अहिंक शरणमे आयल।
हे साँई! अहाँकेर दर्शनले’
शिरडीक धाममे आयल छी।

हर हर महादेव

देव कहिया तक रहबैक सूतल अहाँ,
छोड़ि कैलास अबियौ, एहि भूतल अहाँ

आँखि मूनल करै’ छी, केहन तप अहाँ
चन्द्र, गंगा उठौने करी जप अहाँ
सर्प-माला विभूषित, त्रिनेत्रे भजी
कोन देवक धियाने, हे शंकर अहाँ

माए गौड़ीक आङन बसल छी अहाँ
पुत्र गणपति आ कार्तिक करथि भंगिमा
नृत्य नटराज बनिकऽ करै छी अहाँ
हे महादेव हम छी करैत अर्चना॥

छोड़ि मिथिला गेलहुँ द्वारि कहिया अहाँ
गीत विद्यापतिक हम करी कल्पना
भाव-कोकिल कविक हम कोना जोगि कऽ
राखि, गाबी अहिंक गीत एहि अँगना॥

लोकगीत

आह्वान

उठि जाउ आब भऽ गेल भोर
अछि आस लगा चकबा-चकोर
छथि कानि रहलि, मैथिली अपन
पोछू हुनकर पसरैत नोर। उठि जाउ...

इतिहासक गरिमा आ विभूति
नहि व्यर्थ करू ई समय, सूति
लिखि जाउ वाक् एहि पन्नामे
रंगि जाए भविष्य हरियर कचोर। उठि जाउ...

जे माए सिनेहक शक्ति देल
छथि भेल बौक, विक्षिप्त भेल
हम सुधि हुनकर लेबनि कहिया
ओ मौन पड़लि, भावें विभोर। उठि जाउ...

ओ देलनि पाँखि जे ऊड़ि सकी,
गगनक उड़ानसँ घूरि सकी
रातिक अन्हारमे बारि दीप
के करत आइ कनियों इजोर।
उठि जाउ आब भऽ गेल भोर...

हाथी अगत, आ घोड़ा अगत

हाथी अगत, आ घोड़ा अगत
पिपड़क गाछ तर पूजा करत
बल नहि छै जकरा रौ बौआ
ओतऽ आगाँ जाकऽ टऽगे हनत॥
    हाथी अगत, आ घोड़ा अगत...
बहुत खेलेलैँ', अटकन मटकन
लाबा भड़-भड़ तीसी चनचन
कहतौ रौ बुड़ि सटही तोरा
किऐ ने करै छै तूँ टनमन॥
टीप-टाप छोड़ै आ ढीप-ढाप छौड़ै तूँ
आरे बगुला बनै भगत॥
    हाथी अगत, आ घोड़ा अगत...
एक हाथ मे ले तू झंडा
आ दोसर सै पकड़ै खण्डा,
कर माँ काली के प्रणाम आ
तखन मस्त भऽ चलै रे बन्डा,
आल रंग कप्पा ले, लाल रंग थप्पा ले
बाधा सब तखने टा टरत॥
    हाथी अगत, आ घोड़ा अगत...

माए-बेटाक झगड़ा
(नोक-झोंक)

नीक निपुत्रे रहब ओहिसँ, बेटा जँऽ भऽ गेल बदमास
मूर्ख लेल की कबुला पाती, करब, करत ओ सभटा नाश॥

माए : आ जल्दी सँ रौ जनिढाहा,
जो खाकऽ जल्दी इस्कूल
कनियों जँ अबेर भेलौ' तऽ,
आई धिपऽ देलियौ' करछूल
बातक उत्तर जँ तू केले',
खसा देबौ हम एतहि लहास॥
नीक निपुत्रे रहब ओहिसँ ....

बेटा : माए गैं, तू बड़ तमसा गेलहीं
काज कोना कऽ चलत तखन
भोजक दिन जे ऐंठ अनैछी
तखन रहै छौ पुलकित मोन
बट्टा अनबामे जँ कनियो
देरी भेल लगतौक तरास॥
नीक निपुत्रे रहब ओहिसँ ...

माए : बड़ लबलब्बी धऽ लेलकौए'
आबऽ दहीँ बपहिया के
लऽ खोरनाठी झड़का देबौ' रौ

तोहर असरा कहिया के
एहेन छुछुन्नर छौड़ा एक दिन
माएक लेल पिजाओत गड़ाँस
नीक निपुत्रे रहब ओहिसँ ...

बेटा : बाबू मारथिन दू-तीन मुक्का
ओकर तँ खूब अभ्यासे अछि
तकर बाद तँ तुहूँ बचेवही
से हमरा किछु आसे अछि
मुदा नई अप्पन आदति छोड़बई
जाबत रहत देहमे साँस॥
नीक निपुत्रे रहब ओहिसँ ...

माए : लाज ने होइ छौ' कोनो गत्रमे
जे छैँ' ताड़क गाछे रौ
गामक अप्पन तुड़ियामे तू
पढ़वामे छैँ पाछेँ रौ
जँ पढ़वेँ तँ हाकिम बनवैँ
हेतौ खेलाकऽ नहि किछु तास॥
नीक निपुत्रे रहब ओहिसँ ...

बेटा : माएगै! किछु दुनियों के देखहीँ
तक्खन छोड़हीं गप्पक बाण
गुण्डा आ बदमाश आई जे
तकरे दुनियाँ राखए मान
जँ चुपचाप सज्जन बनि रहवै
छीलऽ पड़तै हमरो घास
नीक निपुत्रे रहब ओहिसँ ...

गीत

पिया, गेलहुँ नुकाई जेना वृन्दावन जाए
कतऽ जङ्गलमे जाकऽ हेरा गेल छी।
राति निन्ने मातल, भोर उगल सुरूज
अहाँ निसबद भेलहुँ, की डेरा गेल छी॥

कोना फागुक बसात अङ्ग छूबि ससरि गेल
कोना चैताक राग, विभोर मोन भेल।
माए कहलनि जे साओन तक अओता बौआ
हम दिने गनैत आब सुखा गेल छी॥

अहाँ यक्षे बनल, जा कुबेरकेर देश
आ पठबै रहै छी, ओतुक्का सनेस।
हमरा लागए ने नीक, ने भरैये' ई मोन
ताकि चन्नाके टुक-टुक चकोर भेल छी॥

मुञ्चेश्वर-गाथा

गामे-गामे, शहर मुहल्ले
घूमै’ छथि बटुकेश्वर आई
नाचि-नाचिकऽ गाबि रहल छथि
पाग पहिरि मुञ्चेश्वर भाई॥

मंचे-मंचे तान धरै’ छथि
चिकरि-चिकरिकऽ गान करै छथि
ध्यान रहै छनि सभ समाज पर
बखराले’ सभ बात गढ़ै’ छथि
डेग-डेग पर सेल्फी लै छथि
फोटो फेकथि फेकू भाई॥
नाचि-नाचिकऽ...
काँखमे झोड़ा, हाथ कटोरा
घूमि रहल छथि घरे-घरे
आश्रम आनि जमाकऽ लेलनि
जोर बजै छथि ‘हरे, हरे’
किछु बाँटथि चेला-चपरीमे
सब टानथि अलबत्ते आई॥
नाचि-नाचिकऽ...
अगिला साल ई बनता नेता
राजनीतिमे अनता त्रेता
उचका लोकक परिकरमाकऽ
तीर्थे-तीर्थे नाम कमेता
अपनेमे लड़ता, दम भरता
भटकि रहल छथि सौसे आई॥
नाचि-नाचिकऽ...

अयोध्या में राम

रामक महल इजोरिया हे
सीता औनाई बैसली
अयोध्यामे मनल बधैया हे
सीता कहाँ जाए बैसली॥

रघुवंशक कुल, दशरथ अएला
कौशल्या संग, आङन बसला
लक्ष्मण-भरत शत्रुघ्न हे
हुनकर माए नुकाई बैसली॥

रघुपुर बसल, सरजू-तट पाटल
आओत रामराज, उम्मीद जागल
सीताक कुटिया अन्हरिया हे
जानकी ओन्हाई बैसली।

देश-विदेशमे, बजलै' डंका
कहाँ गेल रावणक सोनाक लंका
सगर भारत भरि रमैया हे
जानकी भऽ कात बैसली॥

प्रश्न रामसँ

गाबि गाथा सुनाबी अपन गामसँ
प्रश्न पूछै छी हम एकटा, रामसँ।

हम पियासल धरासँ सिनेहक कमल
ताकि अनलहुँ आ पोसलहुँ, बनौलहुँ सबल
अङ्क देलहुँ अहाँकेँ लगा बामसँ
भोग सीताकेँ नहिं भेल अहाँक धामसँ
प्रश्न पूछै छी हम एकटा, रामसँ।

तोड़ि धनुषा अहाँ देल परिचय अपन
दूर कैलहुँ कठिन प्रण, आ जनकक बचन
सुन्न भेलै विदेहक ई सुन्दर नगर
जानकी तजि देलनि जे अपन प्राणसँ
प्रश्न पूछै छी हम एकटा, रामसँ।

हम सोचलहुँ जे सीता पटरानी हेतीह
कहाँ कनियो लागल जे ओ जङ्गल जेतीह
कोन माया देखओलहुँ अहाँ लोककेँ
हम उपराग दै छी, अहाँक नामसँ
प्रश्न पूछै छी हम एकटा, रामसँ।

शक्तिसँ पूर्ण मिथिला असक्के भेलीह
सीता, मिथिला-अयोध्या दुनूसँ गेलीह
आबि बनवाससँ पुनि अरण्ये गेलीह
यैह मर्यादाकेर प्रश्न अभिरामसँ
प्रश्न पूछै छी हम एकटा, रामसँ।

सोहर

दिन-दिन-दिन हम कटलहुँ,
बाट तोहर गनि हे
ललना, जनमल हमर दुआरि
हमर मोन धन-धन हे॥

कोर बैसाए खेलेलहुँ
झूला लगेलहुँ हे
ललना, लाल पियर अङ्ग झपना
सुग्गा-मैना अनलहुँ हे॥

जाए जनकपुर सभ मिलि
मूड़न कराओल हे
ललना, मंदिर-राम आ जानकी
बधैया मनाओल हे॥

गामक लोक मुदित भेल
भोज-भात खाएत हे
ललना, सौंसे पड़ल इजोत
इराके के खेलाएत हे॥

मधु-जननी

रानी, कोन कोन जाकऽ बैसलि छी अहाँ
भरिया अहाँक सगर बौआइत,
निसबदि आइ सूतलि छी अहाँ॥
रानी, कोन कोन...

कटहर, आम, लीची आ जामुन
बेर, अंगूर, कदम्बक झाखुर
मधुपानक अहाँ केर लिप्सा
पूर भऽ जाए, तेँ विकल छी अहाँ।
रानी, कोन कोन...

सब मधुरसकेँ मेल-जोलकऽ
रान्हि अमिय, पादपक मोलसँ
मधु-जननी अहाँ रानी बनिकऽ
मधु-सरितामे विभोर छी अहाँ॥
रानी, कोन कोन...

आस लगा सभ लोक पड़ल अछि
देव-पितर सभ ताकि रहल अछि
धरती पर अमृत रस बटइत
जनि अविरल मधु मातल छी॥
रानी, कोन कोन...

आएल बसन्त

आएल बसन्त, आएल बसन्त
चहुँ दिश पसरल जीवन अनन्त
आएल बसन्त...

जाड़क कलेशसँ ठिठुरि गात,
पतझड़ आएल आ भेल प्रात
किसलय प्रमुदित अछि आबि रहल
अनहरिया दिनकेर भेल अन्त
आएल बसन्त...

हरियर पल्लव, मजरैत आम
आ उठि बैसल अछि हमर गाम
गामे-गामे नगरे-नगरे
आनन्दक क्षण अछि दिग्-दिगन्त
आएल बसन्त...

पिय्यर भेलैक सब रूप रंग
दिनकर उगला उर्जाक संग
जन-जनमे पसरल अछि उमंग
निशिचर सभकेँ भऽ गेल अन्त
आएल बसन्त...

मन मधुर मत्त, मानस मातल
सिहकैत पवन, सुंदर शीतल
फगुआक प्रतीक्षा में बिसरलि,
अल्हर-यौवन भेल रंग-रंग
आएल बसन्त...

जाबत धरि जीवन धरतीपर,
प्रकृति रहतीह प्रवीण प्रखर,
गाछी-बिरछी पोखरि-पहाड़,
मानवी ताकि रहलीह कन्त
आएल बसन्त...

अहाँ कतऽ नुकाएल छी राधा

गोकुलमे सब संगीक संग
बसुलीक तान गैयाक संग
वृन्दावनमे गोपीक संग
हम रही द्वारका या मथुरा
अहाँ कतऽ नुकाएल छी राधा?

नहिं सहल गेल रूक्मिनीक कष्ट
नहिं द्रोपदीक मति भेल नष्ट
हम कतहु रही भूगोल मध्य
भूखल राजा आ तंत्र भ्रष्ट
नहि बिसरि रहल छी अहाँक प्रेम
सम्बल छी अहीं हमर राधा
अहाँ कतऽ नुकाएल छी राधा?

अछि विरह वियोगक आ मेलक
अछि प्रेम चहुँटि हमरा धेलक
द्वारका रही या कुरुक्षेत्र
अछि प्रेम अहींक नुका लेलक
हम कहाँ दूर छी हे राधा
अहाँ कतऽ नुकाएल छी राधा?

गीत सँ भरि दी गगनकेँ

गीतसँ भरि दी गगनकेँ
जाहिसँ सभ झूमि जायत
डूमि रहलई साँस वायुक
कोलाहलमे घूमि जायत।
गीतसँ भरि दी...

नाद जे सूतल परल अछि
वाद जे मातल परल अछि
नाद-अंतर्नाद बनिकऽ
ठोर पर अनघोल लायत।
गीतसँ भरि दी...

बेबसी अछि कानि रहलइ
नहिं केओ किछु जानि रहलइ
नोर नयनक निकलिकऽ
एहि धराकेँ चूमि जायत।
गीतसँ भरि दी...

इजोरिया जे छिटकि रहलइ
शिखा बनिकऽ अटकि रहलइ
दीप सब हृदयक धरामे
जीव मुदित मल्हार गायत।
गीतसँ भरि दी...

काव्यधारा

सनेस

पूजि गणपतिकेँ आ ध्यान अनलहुँ दिनेश
आबि रहलहुँ अहाँ लेल नेने सनेस।

ऋतु बितैत गेल राति-दिन कालखंड
युग बदलल आ लागल उमेरकेर दण्ड
एक अंतराल बाद मोन पड़लहुँ अहाँ
ताकि रहलहुँ अपन हम मुरछल उदेस
आबि रहलहुँ अहाँ लेल नेने सनेस।

मोन टाङल रहय, देह बाँचल रहय
गाछ पाङल रहय, आम लागल रहय
हम भरिया करब, कि कहरिया करब
ताकि रहलहुँ जे भेटत कतऽ ओ धनेश
आबि रहलहुँ अहाँ लेल नेने सनेस।

एहि कालक प्रतीक्षा केलहुँ बहुत दिन
मोन लटकल रहल आ दिमाग भेल खिन्न
सभ मोटरी बनौलहुँ जोड़ि-जोड़ि अखियासि
टाँगि माथे चलल छी जेना अछि घुनेस
आबि रहलहुँ अहाँ लेल नेने सनेस।

प्रेम-पाँती लिखब, की लिखब वेदना
घर-आँगन सजाओल तैं सम्वेदना
हम विरहक वियोगक गेलहुँ गाबि गीत
आ समर्पण करै छी अहींके, जनेश
आबि रहलहुँ अहाँ लेल नेने सनेस।

हम नियारल, भियारल वियोगक लहरि
आ सम्हारल अपन भार दिन-दुपहरि
सङ आह्लाद छल जे अपन भासमे
गाबि जयतहुँ आ लिखितहुँ ई भावुक उदेस
आबि रहलहुँ अहाँ लेल नेने सनेस।

पप्पा, पूरी गोल किए'?
(बाल-प्रश्न)

निमकी नाम आ चान पिड़ुकिया
अजगुत सुग्गाक लोल किए'?
पप्पा पूरी गोल किए'?

बसल किए' अछि दूर तरेगन
मेघ कनैये जेना मोनेमन
बिहुँसि इजोरिया चान लुटाबए
मोती ई अनमोल किए'?
पप्पा पूरी गोल किए'?

दिनभरि सोना सुरुज तपाबय
बनि परदेशी सौंसे भागए
सदिखन सिहरय पवन सभठाँ
तैयो नहिं अनमोल किए'?
पप्पा पूरी गोल किए'?

फूल लाल, पिय्यर आ उज्जर
कोमल फूल गाछ ई बज्जर
पात किए' हरियर कचोर अछि
डाढ़ि ई टेढ़-बकोल किए'?
पप्पा पूरी गोल किए'?

कोइली कू-कू कऽ कए गाबए
कौआ ई की टाहि लगाबए
मुर्गा कुकड़ू-कू की बाँचय
सुग्गा बाजय बोल किए'?
पप्पा पूरी गोल किए'?

बरफक आ पाथरक पहाड़
कल-कल करइत नदिया-धार
सौंसे धरती पानिए पसरल
पानिएँ लै' अनघोल किए'?
पप्पा पूरी गोल किए'?

इराके
(बाल-कविता)

पृथ्वी, आकाश आ पानि, पवन
छथि हवा चललि उपवन-उपवन
अछि बगिया बीच फूलल सुंदर
हम देखि रहल घरमे तन-मन।

तितलीक पाँखि बनिकऽ पतंग
भौंड़ा उड़ैत अछि डारि-डारि
बरखाक बूँद झरि रहल तखन
धरती आ अम्बर लारि-चारि।

बागक आङन गाछक कतार
हम देखै' छी खिड़कीक पार
उज्जर दप-दप बर्फक पहाड़
कूदय सब बच्चा ठाढ़-ठाढ़।

उगलई सुरूज लालिमा तोड़ि
पिय्यर इजोतकेँ छोड़ि छोड़ि
की दिव्य छटा अछि आबि रहल
उतरला देब निज स्वर्ग छोड़ि।

आगाँ नाथ, ने पाछाँ पगहा

अपने करनी, अपने भरनी
अपने मरने ओ वैतरणी
अपने बैसला अपने करनी
अपने आँगन अपने घरनी
अपने जीवन, अपने मरनी
अपने व्योम आ अपने धरणी
अपने घोड़ी जोति रहल छी
अपने आप चलाबी बगहा
आगाँ नाथ, ने पाछाँ पगहा॥

हम एसगर छी, बेबसगर छी
लेकिन हम सारिल निसगर छी
मूसक दौड़ा दौरि रहल छी
भाङ्ग घोटि पीबै' चसगर छी
पाछाँ सभटा छूटि रहल अछि
आगाँ सभ बूझय, हम गरजी
दोसरक सबटा दोष देखै' छी
देखि ने पाबी गुणियाँ लगहा
आगाँ नाथ, ने पाछाँ पगहा॥

हम घूमि रहल छी बिकानेर

हम घूमि रहल छी नगर-नगर
चलि रहल प्रेमसँ डगर-डगर
छी पहुँचि गेल हम बिकानेर।
चाकर रस्ता-पेरा घनेर
नहिं भीड़-भाड़, झगड़ा-झंझट
रेतक धरती, मूँगफलीक ढेर॥

अछि राय बिकानेरक प्रतीक
आनल सभ अयला जोधपुरक।
जूनागढ़ किला आ महल बीच
रखलनि गंगा सिंहक प्रतीक॥

माता करनीक भव्य मंदिर
चहुँ दिस पसरल मूसक कतार।
छोटकी-बड़की, काड़ी-उज्जर
मूसक वियाल समुदाय भार॥

ऊँटक शोधन आ खानपान
ऊँटक दूधक कुल्फीक पान।
राजा मरुथलमे घूमि रहल
गिरहस्थक, यात्रीकेर सम्बल॥

हल्दीरामक भुजिया देखल
बड़का कराहमे भूजि रहल
भुजिया फैक्ट्रीमे कारीगर
रसगुल्ला, सोन-पापड़ी भरल
सेनाक केंद्र, रेलक मंडल
छल आनि बसा, एहि ठाम सदर॥
हम घूमि रहल छी नगर-नगर...

हे समय

हम अहाँके सङ्ग देलहुँ, हे समय
अहींमे सदिखन समाहित, हे समय!
छोड़ि अपनाकेँ जखन हम भटकलहुँ
तैयो अहाँसँ दूर नहिं हम झटकलहुँ,
कहू की हे समय?

कतऽसँ आरम्भ केलहुँ, आ कतऽ
पहुँचि गेल एतऽ कतऽ छी, हे समय
जखन नेहक मेल लग ठहरल रही
संग-संग उमंगके साक्षी अहाँ छी, हे समय!

कल्पना तँ मोनमे उड़इत चिड़ई
पाँखि तँ बनलहुँ अहीं ओकरा संगेँ
उड़ि सकय आकासमे जे, हे समय!

अहाँ सदिखन संग सबहक चलि रहल छी
हम बटै छी अहाँकेँ सबहक सङेँ
अहाँ तऽ रहबे करब संसारमे,
हम कनैत-हँसैत बिछुरब, हे समय!

सिनेह

हम तकैत रही सिनेह अहाँक
अहाँ भगैत रही दूर
पता नहिं किऐक?

कनियो दरेग नहिं रहल अहाँके हमरा पर
अहाँ चिन्हबे नहिं केलहुँ हमरा
जे हम के छी
हम चिन्हाबऽ चाही
अहाँ भागल फिरी
हम गामक छोड़ परक बाटक
कोन पर ठाढ़॥

गाछसँ तोड़ल सिनुरिया आम लेने
हाथमे, अहाँक बाट तकैत रही
अहाँकेँ देखि ओही बाट पर;
नमरैत हमर हाथ
संग सिनुरिया आम।
अहाँक आवेशपूर्ण स्वागत
हमरा बड्ड नीक लागल॥

हमरा बुझा गेल जे
हमरा नहिं बूझल छल
सिनेहक सूत्र
सिनेह तँ देल जाइत छै।
माङल नहिं जाइछ
जतबा बाँटब सिनेह
ततबा भरल रहत हृदयक घर॥

सम्वाद

अहाँ जखन खोलिकऽ रखलहुँ अपन मन
हमरा भेल छगुन्ता
हम किऐक नहिँ बूझि सकल रही अहाँके
हमहूँ नुकबैत रही अपन बोल
जे अहाँ की कहब, की करब
कतहु राग-विरागमे झगड़ा ने भऽ जाए।

अपना लेल सोझ बाट आ सुविधा तकैक
दूर चलि गेल रही, बहुत दूर
'समय' देलनि आश्रय अपना दुनूके
ओतहिसँ सम्वाद निकलल
नेहसँ बनल सिनेह
सिनेहसँ सम्बन्ध अप्पन।

हम तरङ्गिन बातसँ भऽ अन्तरङ्गे,
खोलि सब खिड़की अपन मन आ हृदयके
राखि देलहुँ सब अहाँक समक्ष
बूझि पड़ल जे अहूँके हमरा बिना
लागल छल पियासक पिपासा
भेटल छुधाके शांति हमरा लऽगमे।

सम्वाद, सरस सिनेहसँ निकलल
शांति आ सुखक सनेश लेने
प्रेमसँ प्लावित करैत परानके
सृष्टि रचनामे रहल संलग्न।

विचार

उड़इत चिरई जकाँ
फूजल आकाशमे
बिना गन्तव्यक बाट धेने
उठि रहल
काटल गुड्डी जकाँ
पुरबा-पछबा बसातसँ
जुझैत आ ठहरैत
कोनो मैदानमे खसि पड़ल।

यायावर पथिक
घुमक्कड़ प्रकृति
ने कोनो लक्ष्य
आने कोनो घर
ने कोनो रङ्ग आ ने कोनो रूप
ने कोनो बाट
जतऽ कनियो क्षण बैसि सकत।

इतिहासक खोहिसँ निकलल
भविष्यक खोंछिके भरैक लेल
वर्तमानके उद्वेलित करैत
हमर ई विचार शृङ्खला
घूमि रहल।

ने चाही इजोत
आने बुझैछ अन्हार
देश-देशान्तर घूमि अबैछ
थाकि-हारि कऽ
पुनः आबि
मोनक सागरमे डूमि रहल
धीरे-धीरे हमर विचार
अन्तस्तलके पार
नुका रहल अछि।

माए, जाइ छियौ’

सर्दीक छुट्टीमे यूरोपसँ आएल सौरभ
अपन घर, जतऽ पढ़लक-लिखलक
हमहूँ आएल रही अपन ड्यूटीसँ अपन घर
पत्नीक घरक विनिर्माणक प्रकल्प
सागरके इस्कूल अनैत आ पुचकारैत
बीति गेल टीवी पर नववर्षक प्रोग्राम।

छुट्टीक बाद घूरि गेल छल आपस
घरसँ निकलि मोहल्लाक मोड़ तक
अन्हार रास्ताक सफर
घनगर कुहेसके चिड़ैत
बढ़ैत रहल गाड़ी
दोराहा-चौराहा आ एयरपोर्ट तक।

एयरपोर्टक ट्रॉली पर राखल बैग
तकरा पकड़ने ठाढ़ सौरभ
आगा बढ़वाक मुद्रामे
मूँहसँ निकलल छल एक वाक्य
‘माए, जाइ छियौ’
हमरा सबहक हृदयके विदीर्ण कऽ देलक।

भूमण्डलीकरणक बिहारि
छीनि लेलक हमरा सबहक, बाल-बच्चाके
जीविकाक तलाशमे निकलि गेल
छूटि गेलहुँ हम सब एतऽ
एसगरुआ बनि
उरि गेल चिरई
अपन पिजरासँ।

बड़की-बाड़ी

बड़की-बाड़ी, बड़की-बाड़ी
छल ऐल-फैल
टोलक काते
पसरैत गेल।

अगहनक मास
खरिहान बनल
धानक बोझक
बान्हल मचान
छोटकी खोपरी
चहुँ दिश दलान
भोरे अन्हरोखे सब पहुँचल।

भरि गेल चूल्हि
आ दाईं माए
सौंसे अन्हार,
ओसक फुहार
कारी मेघक
तारा उघार
जारक प्रभाव,
कट-कट करैत
दाँतक स्वभाव

अछि शीत लहर
सौंसे पसरल
लऽ लेत जान
नहिं बाँचि सकब।

तखने लेसल चुल्हाक आगि
छल दाई लगौने, तेज दागि
हम धानक खोपड़ी बीच पड़ल
रोशनी लालटेमक लटकल
छी सूनि रहल
भोरक सुगीत
प्रातक पराती गूँजि रहल
चारू दिश पसरल जीव प्रवल।

धानक उसिनियाँक टाल बनल
भरि सालक आशा, भेल प्रबल
ढेकी-कुटैत छोटकी काकी
लकरीसँ निकलल रम्य गीत
की एहन मनोरम दृश्य आब
देखब कहियो गामेक बीच।

सब भागि गेल
छुटि गेल गाम
ने खेती, आ ने खरिहान
बड़की बाड़ी भऽ गेल सुन्न।

टेंडरक महिमा

आगतम टेंडरम, स्वागतम टेंडरम
देस भरि चलि रहल टेंडरम टेंडरम

जागइत टेंडरम, भागइत टेंडरम
ध्यानमे टेंडरम, स्वप्नमे टेंडरम
खेलमे टेंडरम, जेलमे टेंडरम
रेलमे टेंडरम, तेलमे टेंडरम
कोचमे टेंडरम, फ्रेटमे टेंडरम
रेलकेर इंजनक अछि विशिष्ट टेंडरम।

आधिमे टेंडरम, व्याधिमे टेंडरम
योगमे टेंडरम, रोगमे टेंडरम
नहिं काज अछि कोनो जाहिमे टेंडरम
पूर्ण साधनाक साँसमे समाधि टेंडरम।

टेलिफोन डायरी

टेबुल पर पड़ल एकटा डायरी
टंकित छल शीर्ष शब्द
लीखल छल बहुत नाम
पता आ फोन नम्बर
अतीतक स्मरण करवैत
ओ नाम जे जुड़ल रहल, हमरा सङ
लोक-वेद, सर-समाज आ दोस्त-महीम।

केओ पढ़वैत रहल
केओ सिखवैत रहल
केओ हँकैत रहल गप्प
केओ ठकैत रहल
उनटाकऽ देखी जे पन्ना
तँ मौन पड़ल सब लोक
जे हमरासँ जुड़ैत रहल।

केओ विछुड़ि गेल
केओ फिसलि गेल
केओ ससरि गेल
केओ पसरि गेल
केओ चलि गेल दुनियाँक ओहि पार
जतऽ भगवानक डेरा छनि
छोड़ि गेल हमरा लेल अपन नाम
जकरा काटब तँ इतिहास मेटा जाएत।

अक्षरसँ भरल ई डायरी
हमरा अतीतक बोध करा रहल अछि।

भामती

पिताक आदेश,
सिनेहक सनेस
लगा देलनि अङ्ग
वाचस्पतिक संग।

अपन विचार गढ़ैत
ब्रह्मसूत्र सोझरबैत
अपन टीका लिखैत
लोककल्याणमे
सूत्र सबटा जोड़ैत।

गाछ पोखरिक मोहार
लागल मकड़ाक जाल
मकरा छल दबल
वाचस्पति रहला
ओहिना पड़ल।

पोखरिक पानि छूबऽले आतुर
ओ छत्ता अछि लटकल, संग बन झाखुर
ओहीठाँ पसरल छल आमक गाछ
मधुमाछी परागसँ सब मधु आतुर।

दिन-राति सगर खन
दीपक तेल जरैत रहल
टेमी लेशैत एक हाथ
दीपमे तेल भरैत रहल।

उनैस वर्षक बाद जखन पूरल तपस्या
देखलनि वाचस्पति भामतीक रूप
जे छाया बनि एतेक दिन साधना केलनि
आ समर्पण अपन प्रेमक करैत रहलीह।

कारी रंगक महिमा

कारी पाथर, कारी पहाड़
कारी यमुना, आ जलक धार।

कारी भुजुंग नागिन नचैत
कारी मेघक महिमा जनैत
कारी पाथर कृष्णक स्वरूप
छथि विष्णुक शालिग्राम रूप।

छल रामक कारी वर्ण ताप
कारी नाविक केवट अलाप।
करिया काकी, करिया कक्का
करिया मोशिक करिया थप्पा।

सभ घटा तोप कारी-कारी
कारी मुरूत छथि अविकारी
सब उर्जाके सोखलक कारी
भगवान रूप कारी-कारी।

कारी रङ्गक महिमा कतेक
चहुँ दिश कारी-कारी जतेक
कागत पर आखर बनि अनूप
पूजै छी हम कालीक रूप।

हेरा गेल गाम हमर

बहुत दिनक बाद जखन
मोन भेल गाम चली
दड़िभंगा जाए पकड़ि
गाड़ी चलल निर्मली।

राजमार्ग सड़क यान
लागल जे एकर भान
दुनिया अछि बदलि गेल
चालकके बढ़ल शान।

फटकीसँ निकलि जखन
बढ़लहुँ इजोतमे
रोड छल बढ़ैत रहल
गाड़ी चलैत रहल।

नहिं जानि गाड़ी सब
केमहर झुलैत रहल
गाम भेल निपत्ता
आ गाड़ी ससरैत रहल।

दूर जखन आबि गेल
कोन दन बसात भेल
देखलहुँ ई कोन भँवर
हेरा गेल गाम हमर।

कतेक दूर

कतेक दूर, कतेक दूर
आबि गेलहुँ कतेक दूर?

गाम-घर शिला भेल
लोक-वेद हेरा गेल
स्वर हमर बिला गेल
भूर सभ मुना गेल
पैर तँ नपैत रहल
खेतक सब धूर-धूर
आबि गेलहुँ कतेक दूर?

देह अछि घसा गेल
माथ अछि बिषा गेल
अभिलाषा बिझा गेल
उर्जा अछि मिझा गेल
अङ्ग-अङ्ग प्रत्यंग
सौंसे भेल देह झूर
आबि गेलहुँ कतेक दूर?

कोन ई बसात जे
विश्वभरि पसरि गेल
कोन ई फसाद जे
घरे-घर पसरि गेल
सभ्यता मनुष्यताक
काल बनि ससरि गेल
कान अछि बहीर भेल
झापि देलक तेल तूर
आबि गेलहुँ कतेक दूर?

हमहीं सभटा

कृष्ण हमहीं, आ हमहीं बनल राम छी
एहि दप-दप इजोरियामे अभिराम छी।

आगिमे, पानिमे, वायुमे छी बसल
सौंसे आकाशमे, आ धरतीमे धँसल
रूप इन्द्रक बनाए, छी घूमल सकल
तेँ नारायणक ई हमर नाम छी।

हम गीता आ रामायण बाँचैत रही
आ घरे-घर, मोहल्लामे नचैत रही
अहाँ देखलहुँ, जे सुनलहुँ से सभ सत्य थीक
आब सौंसे ई दुनियाँ, हमर गाम छी।

हम सधने छी लक्ष्मीके अप्पन दुआरि
सभ पढ़ुआके एलैक बड़का जुआरि
हाथ नङटाके देलहुँ धराए तरुआइर
नाम जापय हमर, ई हमर धाम छी।

देखि लेलहुँ विदेशक हम सभटा शहर
सब सौंसे घोरै' छल हवामे जहर
कतहु भोर, कतहुँ साँझ, कतहुँ भेल दुपहरि
चीन्हि लियऽ जे राजा हमर नाम छी।

चुनावक शंखनाद

बाजि गेल अछि शंख चुनावक
कुरुक्षेत्र भेल गाम-शहर।
दल-दलमे सभ दल लटकल अछि
भोर-राति आ साँझ पहर॥

बनल गिरोह बना भैयारी
असला-तसलाक भेल तैयारी।
उठल उजहिया नेता सबहक
टुटपुजिया सभ भेल प्रखर॥
बाजि गेल अछि...

अप्पन-अप्पन ढोल पिटइये
भोज-भात खा' फेर डटइये।
गामे-गामे जीप हकइये
झंडा लेने शहर-शहर॥
बाजि गेल अछि...

पछिला सभटा वाक झपैये
अगिला दिनक हार गथैय।
जकरा जहिना मिला सकय से
झालि पिटैये नगर-नगर॥
बाजि गेल अछि...

ठोरक मुश्की, मुहमे पान
अपने गीतक करइत गान
टोल-महल्ला हल्ला करइत,
नाचय सभठाँ झमर-झमर॥
बाजि गेल अछि...

आजुक दिन

आई फेर बीति गेल
एक दिन
भोरसँ साँझ तक
खाइत-पिबैत
गप्प करैत
फोन करैत।

धिया-पुताक लेल सोचैत
दूर गाममे माएसँ गप्प करैत
धरतीक अलग-अलग भू-भागमे
पड़ल सभ जीवनके देखैत।

हाट आ बजाड़ करैत
मंदिरक आगाँ माथ झुकवैत
अगिला यात्राक लेल पेटी सैंतैत
काल्हि की करब, से सोचैत
बीति गेल आजुक दिन।

प्रथम यात्रा

अहाँ के छी?
'हम सैह तँ तकै' छी'
तकैत-तकैत कतेक दूर
आबि गेल छी पड़ाव तक
उठैत-बैसैत बाटमे।

बाबा-बाबू आ ककाक संग
बड़का, मझिला, सझिला
आ छोटका भैयाक संग
माएक कोरामे
मौसीक सिनेहमे
भौजीक पिरीत सँ
बनैत गेल हमर भाव-भंगिमा आ बेवहार।

इसकूलमे मास्टर साहेब
मारितो छलाह
पढ़बितो छलाह
बुझबितो छलाह।

सङ्गी-साथी बनैत गेल
छुटैत गेल, हटैत गेल

झखरैत गेल
नव-नव रूपमे अबैत गेल।

दरभंगा टीशन पर
ठाढ़ छल रेलक डिब्बा
हमरो ठेलि देलक ओहिमे हमर दाई
केओ नहिं देखलक हमर कनैत आँखि;
गाड़ी ससरि गेल
पहुँचि गेल रही पहलेजाघाट
सब बटोहीक पाछाँ-पाछाँ हमहूँ पहुँचलहुँ
गंगा-धारक कातमे लागल पानीक जहाज पर
केहन रम्य दृश्य!
जहाज चलैत गेल
पहुँचि गेल रही महेंद्रूघाट
पटना शहर
रातिक इजोतमे जगमगाइत नगर
मोन पड़ैछ, ओ प्रथम यात्रा।

पदार्पण—बम्बई शहर

महारानी विक्टोरियाक नामे
बनल रेलवे स्टेशन
कतेको गाड़ी पतियानीसँ ठाढ़
हमर पॉकेटक पुरजीमे
लिखल छल चैम्बूरक पता
चढ़ि गेल रही हार्बर लाइनक गाड़ीमे
ने केओ चिन्हार, ने रस्ता देखनुहार
उतरि, भेलहुँ ठाढ़
लागल छल बोखार।

जूनक मास
बरखाक झमटगर रूप
सबसँ पहिने किनलहुँ एकटा छत्ता,
आ तानिकऽ बिदा भलहुँ होटल ताकए
जतऽ राखब मोटरी आ चोटरी।

तीनटा होटल तकलहुँ
कतहुँ जगह नहिं
एकटा मराठी मानुस कहलनि
'आउ दू घंटा बाद'।
फेर गेलहुँ आ पओलहुँ एकटा सीट
दस रुपया प्रति दिन।

भेटला एकटा रूम-पार्टनर
गुजराती इंजीनियर
सङ्गहि गेलहुँ भोजनालय
लागल जे आबि गेल छी दोसर गाम।

बरखासँ भीजैत शहर
छत्ता तानि चलैत लोक
अट्टालिकाकें तकैत सभ नजरि
जीवंत लगैछ ई बम्बई शहर।

लोक लागल छल
अपन-अपन धुनिमे
अपन-अपन काजमे
केओ काहू मगन
केओ काहू मगन।

व्यापारवाद

मोन पड़य बचपन
उभरैत साम्यवाद
आ सौंसे छल पसरल
अविचल समाजवाद
दूरसँ तकैत आ गहैत
रहए पूँजीवाद
आ वाद सभक बीच
उठैत द्वंद्व आ झगड़ा।

फुसला लेलक आदमीके
वाद सभक उन्माद
बँटि गेल समाज
बँटि गेल सभ देश।

असमर्थ लोक
वादक मरीचिकामे फसल
तोड़लक बर्लिनक देवाल
जोड़लक पूर्व आ पश्चिम जर्मनी
बिखड़ि गेल रूसक स्वराज।

उठल एहि बीच भूमंडलीय तूफान
उदारीकरणक झंझावात
भागि गेल लोक
गाम छोड़ि शहर
बच्चा सभ छोड़लक परिवार

देश आ विदेशक आर-पार
घरक पिजरा भेल उदास
बढ़ैत गेल विरहक साँस।

अङ्गीकरणक बदलैत काया
तकनीक उभरैत स्वरूप
वादक उन्मादके मथैत आ गथैत
सजाबऽ लागल सब अपन बाजार।
गाम-शहर, देश-बिदेश सब ठाम
लागल बस्तु आ सेवाक पथार।

हम घरमे रही या कतहु
की खाएब, की पहिरब
की देखब, आ की सुनब
कतऽ घूमब, कतऽ बाजब
सभक पाछाँ एक अदृश्य हाथ
आङुर पर नचवैत रहल चपल माथ।

घरमे बाजी या नहिं बाजी
घरक बाहर गाल बजाबी
या मुँह पर राखि चुप्पी
हम दौड़ी या पलटी मारी
सब सिखावय पढ़ावय ई व्यापारवाद।

खेत आ खरिहानमे
घर बीच आ आसमानमे
नदी आ सागरमे
व्यक्ति आ समाजमे
सबकेँ फुसला रहल ई व्यापारवाद।

नवतुरिया मैथिल

छिछलि रहल अछि पाग माथसँ
नटुआ हऽम महान छी
हम बजरङ्गी रामक सेवक
आ सूतल हनुमान छी।

उकटा-पैंची करी हम सदिखन
नहिं मानी ककरो केहनो सन
इर्ष्यासँ भूदेव कहाबी
लोभी हम यजमान छी।

बेचि घराड़ी गामहि छोड़लहुँ
हाथ दुनू हम सभठाँ जोड़लहु
घूस जोगाड़ि हम नोकरी तकलहुँ
तैयो बनल अकान छी।

खाली समय देखै' छी क्रिकेट,
गप्पे हाँकी, तोड़ी विकेट
नीक लगैये' बोल ने ककरो
राजनीति सम्मान छी।

योग बिसरलहुँ, ज्ञान बिसरलहुँ
सङ्गीतक हम ध्यान बिसरलहुँ
गप्प-सरक्का ठानि रहल छी
मैथिल हम अभिमान छी।

हम आब लिखब की?

सभटा पहिने अछि लिखा गेल,
हम आब लिखब की?

गीता, रामायण, वेद चारि
बाल्मीकि, व्यास लिखलनि नियारि
सभटा पुराण उपवेद लिखल
उपनिषद कथा सभ सूत्र बनल
ज्ञानक दर्शन सभ घूमि रहल
हम आब लिखब की?

विज्ञानक अनुसंधान भेल
विनती आ भक्तिक मेल भेल
सीमा सरहद धरतीक भेल
सौंसे दुनियाँ अछि एक भेल
भवभूति, माघ आ कालिदास
श्रृंगार, वियोगक विद्यापति
हम आब लिखब की?

टूटल-बिखरल-जकरल समाज
पूजय मंदिर, मसजिद नमाज
अछि प्रेम निपत्ता भेल आई

सम्वादहीन घर भेल आई
अछि अर्थतंत्र उद्दण्ड बनल।
हम आब लिखब की?

धरतीकेँ सोधि रहल मानव
अछि महायंत्र युग के दानव
अछि कतऽ नुका अदृश्य हाथ
ठकइत मानवके लगा लाथ
सौंसे विज्ञापन छापि रहल
हम आब लिखब की?

मिझा गेल डिबिया

कारी, लाल, पिय्यर आ हरियर
रंगक आवरणसँ
घेरायल अछि दीपशिखा।

फेंकि रहल इजोत चारु कात
ऊर्ध्व चेतना वायुकेर संग
उठि रहल आकाशमे पकरय।

ठुट्ठ टेमी, तेल निङ्घटल
घट बनल सीसाक समटल
घोर आङ्न आ दलानक
दीप अछि बनि गेल डिबिया।

तोड़ि सब जाली निशाके
दीप्त कयलक घऽर-आङ्न
तमसोमा ज्योतिर्गमय सम
भावसँ भरलैक तन-मन।

साँझसँ लऽ भोर तक
अनहारसँ इजोर तक
निजके जराए निमग्न बनि
डिबिया बनल दीपक शिखा।

अनसोहाँत बरखा

फगुआक परात
टूटि गेल निन्न
भोरे भोर।

हहाकऽ अबैत
बरखाक झट्टक
विद्रोही मेघ
अल्हर साँढ़ जकाँ
विद्रूप व्यवहार
लागल जे तोड़ि देत घर
झटका सँ।

हहाइत-फुफआइत एकर ढंग
फागुनक मासमे कहूँ एहन रंग?
“माघ बरिसबे करए
भाए बँटवे करए
बाँस कटवे करए”
कहैत छलाह हमर दादा।

मुदा आब तँ फागुन आएल
एखन शीतोष्णक समय
बसन्ती बयारक निर्गमन

सिहकैत पवन
एखन किऐक भेल बरखाक आगमन?

आमक मज्जरि भेल तीत
हरियर मज्जरि पर लागल पानि
आ भ ऽ जाएत कारी
खसि पड़त गाछसँ नीचाँ
गहूम आ रब्बी पत्ती
सब होयत छहो छीत।

सुखा गेल जिराति पड़क गाछ
लगा नहिं सकलहुँ एखन आमक बिज्जू
भोरमे उठैत सूर्जक चक्का
झँपि गेल अछि मेघक बीच
हवा देलक संग गर्म मेघके
आ बरसि गेल ठनकाक संग
चमकैत रहल बिजुड़ीक संग।

कोना हयत संजयक माएक क्रिया-कर्म
कोना सम्हरत भोज-भात
पात्र तँ अएबे करताह
सब बस्तु-जात लेबे करताह
तोरथिन्ह संजयक उतरी
पंडित बचताह गरुड़ पुराण
कहताह भेल उद्धार।

भोरसँ उठल बूढ़ माए
चुप्प अछि, बिना-निन्नक

उतरि नहिं सकय चौकीसँ
सोचि रहल होयत मोने-मोने
कहैत अछि—“एहेन मेघ
देखल नहिं कहियो फागुन मास।”

कहाँ गेल रहय अगहनमे ई मेघ
“धन ओ राजा, धन ओ देश
जतऽ बरसथि अगहनमे मेघ”
अगहन आ पूस घरि
शीतक केहन प्रकोप
जे ठिठुरि गेल रहय प्राण
घरमे बैसलि, नहिं भेल त्राण।

आब देखी केहन होईछ चैतक बेवहार
नववर्षक प्रकोप
वैशाख आ जेठक रौद
तापि सकब की?
धरती तँ गर्म भेल जाए रहलीह
सूर्जक ताप सँ
बिखरैत गाछक छाहरि
कटने जाइयै’ लोक गाछ-बिरीछ
भागि गेल कोइली आ कौआ।

कोना झटकैये’
आकाशमे भटकि-भटकि
मेघसँ टकराइत
ई अनसोहाँत बरखा।

जलवायु परिवर्तन

देश-विदेशमे भेल हल्ला
जलवायु-परिवर्तनक वार्तालाप
भीषण रूपक करय उद्‌भास
सब देश मिलि केलक विचार
अपन-अपन देशक तैयारी
अरबो-खरबो रुपयाक व्यापार
उतरि गेल कारपोरेटक बाजार।

मुदा के रोकत सूर्जक गर्मी
पृथ्वी परक पथार
हवामे जहर घोरैत रसायन
आकाशक तरेगणके झपैत
मनुक्खक निसास।

की हेतै माए, अगिला पीढ़ीके
कतऽ जा साँस लेत धिया-पुता
पढ़ि-लिखि गेल विदेश
नहिं अबैत अछि अप्पन गाम
आमक गाछ ककरालै’ रोपब?
सीसोक गाछ गेल सुखाए
गाछीक गाछ सब भेल बूढ़
कहिया तक सहत प्रकोप?

माए कहलनि एकटा बात–
“अपन काज करैत रहू,
गाछ-बिरीछ रोपैत रहू
धीरे-धीरे;
कम्म खर्च करैत रहू
पानि, वायु, पैसा-कैंचाक।
साफ राखू घर आँगन
आ पृथ्वी परक पराग;
गवैत रहू गीत
प्रकृतिक आँगनक संगीत
मिलिकऽ करू सब काज
उठवैत रहू जलवायुक रक्षाक आवाज।”

विदेशरक मेला

मकर नहाय सब विदा भेल
विदेशर बाबाक दर्शन लेल।

मनीगाछी रेलवे टीशन
लोकसँ भरल लाटफार्म
दरिभंगासँ आएल ट्रेन
एको कोठरीमे जगह नहिँ
बिसपिपड़ी जकाँ पिसाइत लोक
ठूँसल-ठाँसल, जानवरक पिंजड़ा जकाँ।

लाटफार्मक लोक धक्का देलक
आ खोलि देलक ट्रेनक केबाड़
ट्रेनक भीतर पिसैत लोक
लड़ऽ लेल तैयार
जे भीतर छल, से बाहर बलाके
आबहि ने देत
यैह संघर्ष तँ दुनियाँमे सभ ठाम।

करिया कका फनैत घुसलाह
जगह बनाय चनुआ, मनुआके उठेलनि
सब दाई-माए भीतर गेलीह

हमरा तँ भीड़ अपन कन्हा पर उठा लेने रहए
जेना वासुदेव कृष्णके।

गाड़ी ससरि गेल
'लोहना' टीशन पर सब उतरि गेल
आगाँ छल कोशिकन्हा
झंझारपुर आ घोंघरडीहा
निर्मली आ कोसीक धार।

लोहना सँ विदेशर बाबाक धाम
सीधे रस्ता डेगे-डेगे छल बजार
सिन्नूर, टिकुली, बद्धीक भड़मार
बाबाक दर्शनक बाद घूमि गेल रही।

भेटल छल 'चनाचूर गरम'
तिकोनी कागज में राखल
चट-पट रंग-बिरंग
आनन्दक तरंग
चिचियाइत छोटका व्यापारी
रस्ता खेपा गेल
लागल जे कोना समय बीतल
कानमे एखनहुँ अछि ओ शब्द
'चनाचूर गरम'।

आत्माक खोज

करीब हजारो वर्षक भ्रमण
हिन्दक भूखण्ड पर
ताकि पयलहुँ जीवन।

किऐक, कोन आ कोना
ज्ञान आ विज्ञानसँ
तर्क आ वितर्कसँ
भ्रमण आ परिभ्रमणसँ
धारणा, ध्यान आ समाधिसँ।

तकैत-तकैत आबि गेल छी
पहाड़ पर
झड़नाक श्रोत तक
जङ्गलक खोह तक
दूर, शहर कोलाहल सँ
गामक हलचल सँ।

तकैत अपन बाट
मुदा, लागि रहल जे
अपनेसँ दूर भऽ गेल छी
निन्नसँ भेर भऽ गेल छी।

अंतःमे द्वंद्व अछि,
अन्हार घर साँपे-साँप
खुजैछ दृष्टि
जगैत ज्ञान
समटैत ध्यान
द्वंद्वक तारकेँ डोलबैत
ओझराएल अवरोधकेँ सोझरबैत।

तटस्थ भऽ गेल छी
समुद्रक पानि जकाँ
पहाड़क आकृति जकाँ
नदीक प्रकृति जकाँ
सूर्यक अभिव्यक्ति जकाँ
चन्द्रक मौलिकता जकाँ
तरेगनक दृष्टि जकाँ
गाछ-वृक्षक स्वभाव जकाँ।

अपना घरमे आबि
अपन स्थलकेँ पकड़ि
अपन साधनामे रत
बन्न आँखिसँ
देखैत छी एक रूप
की इएह छी
अहाँ, हे आत्मा!